

कथा सरिता

किसी भी उम्र में सीखा जा सकता है

महादेव गोविंद रानाडे को नई चीजें सीखने की सदा चाह रहती थी। वे हमेशा तत्पर रहते थे कि जो अब तक नहीं सीख पाए, उसे पूर्ण मनोयोग से सीख लें। कई बार लोग हैरान हो जाते थे कि रानाडे ने इतनी जल्दी कोई नई चीज कैसे सीख ली? रानाडे कहते थे कि सीखने के लिए बस लगन की आवश्यकता होती है। लगन होगी, तो जटिल से जटिल विधा भी आसानी से सीखी जा सकती है। एक बार की बात है रानाडे कलकत्ता से पूना के लिए रवाना हुए। रेल का सफर दो दिनों

राजा विक्रम सिंह ने एक बार अपने दरबारियों से तीन प्रश्न पूछे। दरबारियों ने अपने अनुसार उत्तर दिए पर राजा किसी से भी संतुष्ट नहीं हुआ। राजा का पहला प्रश्न था, व्यक्तियों में सर्वश्रेष्ठ कौन है? दूसरा, सबसे श्रेष्ठ समय कौनसा है और तीसरा प्रश्न था, सबसे बड़ा कर्म क्या है? इसके बाद राजा विक्रमसिंह ने दरबार में आने वाले हर व्यक्ति से यही प्रश्न पूछे पर किसी ने भी संतोषजनक जवाब नहीं दिया। एक दिन राजा प्रश्नों के उत्तर की खोज में अपने राज्य से निकल गया। वह जंगल में इधर-उधर भटक रहा था कि उसे एक कुटिया दिखाई दी। राजा उस कुटिया में पहुंचा। वहां एक महात्मा पौधों को सींच रहे थे। राजा को देखते ही वे पौधों में पानी देना छोड़कर राजा के पास गए और उन्हें

एक धर्मपरायण स्त्री थी। उसका नाम पार्वती था। अपना हर काम वह ईश्वर को याद करते हुए करती थी। गरीबों की मदद करने में हमेशा आगे रहती थी। जितना संभव होता वह दान-दक्षिणा भी खूब देती थी। अपने पति से भी जब वह ईश्वर का नाम लेने को कहती तो वह कहता कि वह बुढ़ापे में फुर्सत से भगवान का ध्यान करेगा और दान-दक्षिणा देगा। इस बात पर कभी-कभी पार्वती और उसके पति में बहस भी हो जाती थी। एक दिन पार्वती ने अपने पति से फिर कहा, 'देखो, हमें नहीं पता कि हमारी जिंदगी कितने दिन की है, इसलिए आप भगवान की पूजा ध्यान बुढ़ापे में नहीं जब भी समय मिले कीजिए।' इस पर पार्वती के पति ने कहा, भगवान की पूजा ध्यान में रमूंगा तो घर कौन चलाएगा? यदि हमारे पास धन-संपत्ति नहीं होगी तो हमें कोई नहीं पूछेगा। जीने

एक नगर में एक ज्ञानी महात्मा रहते थे। उनके पास अनुयाइयों और श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती थी। इससे उनकी तपस्या में बाधा पड़ती थी। इस कारण वे हिमालय के पर्वतों में जाकर एकाकी और सरल जीवन व्यतीत करने लगे। लेकिन उनकी प्रसिद्धि इतनी अधिक थी कि लोग राह में आई हर बाधा को पार करके वहां भी उनके पास पहुंच जाते थे। लोगों का मानना था कि महात्मा उन्हें दुःखों और समस्याओं से छुटकारा दिला सकते हैं। एक बार महात्मा अपने ध्यान में लीन थे। वे तीन दिन तक लगातार ध्यान में बैठे रहे। इन तीन दिनों में इतने श्रद्धालु उनके दर्शन के लिए इकट्ठे हो गए कि और लोगों के लिए वहां जगह ही नहीं बची। महात्मा ध्यान से उठकर आए और सभी उपस्थित लोगों से कहा, आज मैं तुम सभी को दुःखों और कष्टों से मुक्ति का उपाय बताऊंगा लेकिन आप सभी को यह वचन देना

का था और उनकी पत्नी भी साथ थी। रानाडे ने रेल में बैठते ही एक बांग्ला अखबार खरीदा। उनकी पत्नी ने हंसते हुए कहा - आपको तो बांग्ला भाषा आती ही नहीं है, फिर इसे क्यों खरीदा? आप इसे पढ़ ही नहीं पाएंगे। रानाडे ने जवाब दिया - दो दिन के सफर में बांग्ला आसानी से सीखी जा सकती है। पत्नी को इस बात पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ, किंतु रानाडे ने बड़ी बारीकी से बांग्ला लिपि और उसके गठन का अध्ययन किया और पूना

बिठाकर उनके लिए ठंडा पानी और फल ले आए। तभी एक व्यक्ति वहां पहुंचा जो बहुत घायल था और दर्द से कराह रहा था। अब महात्मा उस व्यक्ति की सेवा में लग गए। उन्होंने

तीन प्रश्न

उस व्यक्ति को लिटाया, उसके घावों पर लेप लगाया। पीड़ा से बेहाल व्यक्ति के सिर पर महात्मा हाथ फिरा रहे थे ताकि उसे थोड़ी राहत मिले। राजा विक्रमसिंह यह सब बड़े ध्यान से देख रहे थे। जब वह व्यक्ति चैन से सो गया तो राजा ने अपने तीनों प्रश्न महात्मा से पूछे। महात्मा बोले, राजन, आपके आने से लेकर

के लिए भौतिक साधनों की आवश्यकता पड़ती है। और उन्हें जुटाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। तुम हमेशा भगवान का नाम जपती रहती हो क्या कभी भगवान ने थाली परोस कर तुम्हारे समाने रखी है? कुछ दिनों बाद पार्वती का पति अचानक बीमार पड़ गया। वह उसे

ईश्वर का ध्यान

लेकर वैद्य के पास गई। वैद्य ने उसे सुबह, दोपहर और शाम को पीने के लिए दवा दी। पार्वती ने वह दवा एक अलमारी में रख दी। सुबह से शाम हो गई पर पार्वती ने दवा अपने पति को नहीं दी। पति ने सोचा कि शायद उसकी पत्नी दवा देना भूल गई है। उसने दवा मांगी तो

होगा कि तुम किसी को भी नहीं बताओगे कि मैं यहां रहता हूँ और न ही किसी को यहां भेजोगे। मैं यहां बिल्कुल एकांत में रहना चाहता हूँ। अब मुझे एक-एक करके अपनी समस्याएं बताओ। अब एक-एक करके अपनी समस्याएं बताओ। कोई अपनी समस्या कहने लगता तो दूसरा उसे टोक देता। क्योंकि सब जानते थे कि यह

जीवन का अर्थक

महात्मा से मिलने का अंतिम अवसर है और सभी उनसे अपनी समस्या का समाधान चाहते थे। इस होड़ में वहां शोर होने लगा। महात्मा ने तब चिल्लाकर कहा, 'कृपया शांत हो जाइए! आप सभी अपने-अपने कष्ट और तकलीफें एक पर्चे में लिखकर मेरे सामने रख दीजिए!' जब सभी लोग लिख चुके तब महात्मा ने एक टोकरी

पहुंचकर अपनी पत्नी को पूरा अखबार पढ़कर सुना दिया। उस समय रानाडे की उम्र 60 वर्ष की थी। उनकी यह मनोयोग साधना आज की अस्थिर युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा देने वाली है। प्रस्तुत घटना का निहितार्थ यह है कि यदि सीखने की इच्छा प्रबल हो तो किसी भी उम्र में और किसी भी परिस्थिति में सीखा जा सकता है। वस्तुतः लगन असंभव दिखने वाली उपलब्धियों को संभव बना देती है।

अब तक जो भी मैंने कार्य किए उन्हीं में इन प्रश्नों के उत्तर हैं। राजा ने कहा, कैसे महात्मन, मैं समझा नहीं। महात्मा ने समझाया, जब आप मेरी कुटिया में आए थे तब मैं पौधों में पानी दे रहा था। वह मेरा कर्तव्य था,, लेकिन तभी आप आ गए। मैं अतिथि के यानी आपके स्वागत में लग गया। तभी यह घायल व्यक्ति आ गया। मैं अतिथि सेवा का कर्तव्य त्यागकर इसकी चिकित्सा में लग गया। इसका तात्पर्य यह है कि जो भी तुम्हारी सेवा प्राप्त करने आए, उस समय वही सर्वश्रेष्ठ मनुष्य है। उसकी सेवा सर्वोत्तम कर्म है। और कोई भी कार्य करने के लिए वर्तमान ही सर्वोत्तम समय है। उसके अलावा कोई और समय नहीं है।

पार्वती ने कहा, कोई बात नहीं, तीनों समय की दवा एक साथ पी लेना। पति को इस बात पर क्रोध आ गया और वह बोला, औषधि लेने का भी तरीका होता है। एक साथ दवा पीने से बीमारी ठीक नहीं होती वह तो खुराक के हिसाब से धीरे-धीरे पीने से ही ठीक होती है। अपने पति की बात सुनकर पार्वती बोली, ठीक कहा आपने। हम सब भवरोग से पीड़ित हैं। इसके उपचार के लिए हमें हर रोज दवा के रूप में भगवान का स्मरण और सत्कर्म करने चाहिए। रोग बढ़ जाने या मृत्यु निकट आ जाने पर एक साथ दवा लेने से कोई लाभ नहीं होगा। पार्वती की बातों से पति की आँखें खुल गईं। उस दिन से वह भगवान का ध्यान करने लगा और अपनी पत्नी के साथ मिलकर लोगों की सेवा में जुट गया।

में सारे पर्चों को मिला दिया और बोले, यह टोकरी एक-दूसरे के सामने फिराते जाओ। प्रत्येक व्यक्ति इसमें से एक पर्चा उठाए और पढ़े, फिर यह तय करे कि वह अपने दुःख ही अपने आपस रखना चाहेगा या किसी और के दुःख लेना पसंद करेगा। हरेक व्यक्ति ने एक-एक टोकरी में से जो पर्चा हाथ में आया उसे पढ़ा और पढ़ते ही चिंता में पड़ गया। सभी लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि उनके दुःख और तकलीफें कितनी ही बड़ी क्यों न हों पर औरों के दुःख-दर्द के सामने वे कुछ भी नहीं हैं। दो घंटे के भीतर उनमें से हर किसी ने सारे पर्चे देख लिए और सभी को अपने ही पर्चे अपनी जेब के हवाले करने पड़े। दूसरों के दुःखों की झलक पाकर उन्हें अपने दुःख हल्के लगने लगे थे।

प्रसन्न रहने का राजमार्ग

मानव के मन में भय रूपी आतंक के अंधकार के लिए जवाबदार कौन? यह प्रश्न सामान्य व्यक्ति का नहीं लेकिन एक भावनाशील कवि को भी सताता है - इसलिए वे परमात्मा को पूछते हैं - "आकाश में तारों का भात, धरती कूल विधान, सृजन किया और सृजन तात। मानव मन में है मधरात?"

दुःख और पीड़ा से त्राहिमाम मानव भी ऐसा ही फरियाद करते हैं। "भगवान, मैंने तो आश रखी थी चांदनी पूनम की, आपने मेरे नशीब में अमावस का अंधकार क्यों किसलिए लिख दिया? क्यों लिखा? मैं तो प्रसन्नता की तलाश में ये धरती पर आया था एक तरफ मानव जीवन का वरदान और दूसरी तरफ दुःखों के अंबार का अभिशाप?"

हकीकत में विश्वनियंता जगत दुःखदायी नहीं लेकिन उल्लासपूर्ण बनाया है। यदि हम गुलाब की ओर न देख कांटे की ओर नजर रखें तो उसमें ईश्वर का क्या दोष? चेहरें पर दुःख की छाया लेकर जीना ये जिंदगी जीने की सबसे खराब आदत है। बादल को हटना है और प्रसन्नता का सूर्य उदय होना ही है, ऐसी श्रद्धा ही जीवन में अपार प्रकाश प्रदान कर सकती है।

अपने दैनिक जीवन को स्वर्गीय आनंद से भरपूर चहकता-महकता बनाने का रसायण अपने हाथ में ही है। पत्नी झगड़ालू हो, पूत्र बेपरावाह हो, बाँस अभिमान का पूतला हो, मित्र प्रपंची हो स्नेही, चापलूस हो, सब तरफ से असहकार बना रहता हो, तब हमें भयभीत वा निरूत्साही बनने के बजाय सदा स्मृति युक्त रहना यह कैसे भूल सकते हैं?

हम कोई बाह्य दूषण ग्राही, रिसेविंग सेंटर तो नहीं हैं। अनंत शक्तियों और सामर्थ्य के विविध स्वरूप आत्मा अंधकार का शिकार होने के लिए यह धरा पर अवतरित तो नहीं हुआ। उनका अवतरित होने का भाव यह है कि प्रकाश पथ से आत्मविश्वास की अवतरित यात्रा के लिए हुआ है।

विदेश में रहती एक पीड़ित महिला का उदाहरण है कि वे महिला आर्थिक स्थिति अत्यंत चिंताजनक थी। एक ठीक होता तो दूसरा परिबल टूट जाता। ऐसी दयनीय स्थिति थी। ऐसी मुश्किल हालत से उनका चेहरा खूब गंभीर बन गया था।

वे महिला ने मन ही मन जीवन में दृष्टिकोण को बदलने का निश्चय कर लिया। उसने संकल्प किया कि कैसी भी मुश्किल में होते भी वह बहुत हंसेगा। शुरुआत में वे महिला को हंसना बहुत मुश्किल लगता था। लेकिन धीरे-धीरे उसने हास्य के छिपे स्थान ढूँढ लिया। अब वे छोटी-छोटी बातों पर हंसने लगी। धीरे-धीरे हंसने का आनंद आने लगा। अब हास्य उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

परिणाम यह हुआ कि जो उनके गमगीन चेहरा देख दूर-दूर रहने का पसंद करते लोग अब उनके नजदीक आने लगे। धीरे-धीरे वे महिला की लोकप्रियता बढ़ने लगी। लोगों ने वे महिला के मकान का नया नाम रखा 'आनंद भवन'।

कोई भी परिस्थिति में जीवन को सजा या अभिशाप मानने की जरूरत नहीं है, क्योंकि ईश्वर ने जीवन की रचना ऐसी की है। कोई कैसा भी इंसान हो लेकिन आनंदमय जीवन जी सकता है। जीवन को खुशमिजाज एवं प्रसन्नतापूर्ण रखना है तो ये है उनके मूलभूत नियम -

1. मुझे कोई दुःख नहीं पहुंचा सकता, सिवाए की मेरा मन, यानि की मैं मेरा मन को शुभ संकल्पमय बनाकर हर परिस्थिति में अनाशक्त रहकर जरा भी विचलित नहीं होने दूंगा। हर परिस्थिति को आनंदमय, व प्रसन्नतापूर्ण बनाकर स्वागत करूँगे।

2. मैं यह संसार एवं व्यक्तियों के साथ मेरा रिश्ता निःस्वार्थ रखूँगा। अपेक्षाओं के भिक्षा ले याचक की तरह नहीं। लेकिन अपेक्षा मूक्त इंसान की तरह जीवन व्यतित करूँगा। मैं भिखारी नहीं हूँ, दाता हूँ, ऐसे भाव से जो भी मेरे पास है वे अर्पित करूँगा।

3. हर रोज सुबह की शुरुआत परमात्म सत्ता को धन्यवाद देकर करूँगा। अपनी योग्यता व विशेषता को कार्य में लगाऊँगा।